व्यंग्य यात्रा

सार्थक व्यंग्य की रचनात्मक त्रैमासिकी

वर्ष : 21 अंक : 85

अक्टूबर-दिसंबर-2025

'हिंदी व्यंग्य का संक्रमण काल' एवं 'श्रीलाल शुक्ल जन्मशती'
पर विशेष सामग्री

मूल्य ₹ 20

साहित्य अकादेमी एवं व्यंग्य यात्रा के संयुक्त तत्वावधान में हिंदी व्यंग्य के संक्रमण काल पर परिसंवाद

उद्घाटन सत्र में अकादमी सचिव के श्रीनिवास राव, अध्यक्ष माधव कौशिक और प्रेम जनमेजय। द्वितीय सत्र में देवेंद्र कुमार देवेश (संचालन) गौतम सान्याल, यशवंत व्यास, ज्ञान चतुर्वेदी (अध्यक्ष) प्रभात रंजन और राकेश पांडेय। तृतीय सत्र में संजीव कुमार, प्रताप सहगल, लीलाधर मंडलोई (अध्यक्ष) रमेश सैनी और गिरीश पंकज।

व्यंग्य पाठ सत्र में- सुभाष चंदर (अध्यक्ष) रणविजय राव (संचालन) स्वाति चौधरी, कृष्ण कुमार आशु, फारूक आफरीदी, रिंकल शर्मा, अतुल चतुर्वेदी, आलोक पुराणिक, अर्चना चतुर्वेदी, अलंकार रस्तोगी और आचार्य राजेश कुमार।

अशोक अग्रवाल, गीताश्री, मनीष वैद्य, विमलेश त्रिपाठी, यतीश कुमार, सुभाष राय, संजीव पालीवाल, विभा रानी, वियोगिनी ठाकुर को स्पंदन सम्मान- 2025 की बधाई।

'चाय पर गुफ्तगू' में अशोक वाजपेयी से लीलाधर मंडलोई का संवाद, राकेश शर्मा को 'माधवराव सप्रे' सम्मान, भोपाल में संतोष चौबे के 'गरीबनवाज' का लोकार्पण एवं चर्चा। आकाश माथुर को वागीश्वरी-2025 पुरस्कार और रामदरश मिश्र न्यास सम्मान।

'उन्मेष' में 'कालजयी मध्यकालीन और आधुनिक व्यंग्य साहित्य' पर विमर्श के सहभागी- अशोक चक्रधर, महेश गर्ग, प्रेम जनमेजय, आशुतोष जावडेकर, चरण पटनायक, वी नित्यानंद। अल्मोड़ा लिट्रेचर फेस्टिवल में व्यंग्य विधा पर सत्र में लालित्य ललित, नवीन चंद लोहनी, प्रेम जनमेजय एवं दीपा गुप्ता। 'चित्र नगरी संवाद' में श्रीलाल शुक्ल पर चर्चा।

नंदलाल पाठक साहित्यायन पुरस्कार 2025 दीक्षित दनकौरी और अभिषेक कुमार को। प्रेसीडेंसी विश्वविद्यालय कोलकोता के छात्रों द्वारा व्यंग्य यात्रा का लोकार्पण, व्यंग्यम के मंच पर व्यंग्य यात्रा लोकार्पित। डॉ. संजीव कुमार 'इंडिया बुक ऑफ रिकार्ड्स में।

व्यंग्य यात्रा

सार्थक व्यंग्य की

रचनात्मक त्रैमासिकी

अक्टूबर-दिसंबर 2025

वर्ष-21 अंक-85

एक अंक : 20 रुपए

पांच अंक : सौ रुपए

डिजिटल रूप में NotNul पर उपलब्ध

neelabhsrivastav@gmail.com

सहयोग राशि 'व्यंग्य यात्रा' के नाम से ही भेजने का कष्ट करें।

संपादक

प्रेम जनमेजय

73, साक्षर अपार्टमेंट्स
ए-3 पश्चिम विहार
नई दिल्ली-110063
मोबाइल : +91-9811154440

ई-मेल-
premjanmejai@gmail.com
yatravyangya2004@gmail.com

आवरण : संदीप राशिनकर की कलाकृति पर आधारित।

रेखाचित्र : संदीप राशिनकर

कानूनी सलाहकार (अवैतनिक)
एडवोकेट कुलदीप आहूजा
उच्च न्यायालय

प्रबंध सहयोग
राम विलास शास्त्री
मोबाइल : +91-9911077754
+91-8920111592

'व्यंग्य यात्रा' में प्रकाशित लेखकों के विचार उनके अपने हैं। विवादास्पद मामले दिल्ली न्यायालय के अधीन होंगे। संपादन एवं संचालन पूर्णत: अवैतनिक और अव्यावसायिक।

अनुक्रम

आरंभ 1-3

चंदन धिरें 4-6
चंद्रेश्वर, देवमणि पांडेय, वंदना वाजपेई, श्रीकांत चौधरी, विष्णु नागर, पंकज चतुर्वेदी, समीक्षा तैलंग, सम्राट सुधा, विप्रम, अरुण नैथानी, मोहम्मद हुसैन हाटपिपलीयवाला, राकेश सोहम,

पाथेय 7-28

प्रेम जनमेजय- रामदरश मिश्र: उर्जा की मेरी संजीवनी 7

प्रेम जनमेजय- व्यंग्य झरोखे का सजग दृष्टा चला गया 9

विश्वेन्द्र ठाकुर- 'किस्सा बहराम चोट्टे का' अंश 10

श्रीलाल शुक्ल- **जन्मशती पर विशेष** 11-28

मकान और 'विश्रामपुर का संत' से अंश 11

शैलेंद्र सागर- श्रीलाल शुक्ल : राग दरबारियों का... 13

सेवाराम त्रिपाठी- श्रीलाल शुक्ल:दायरों के भीतर और बाहर 15

प्रेम जनमेजय- श्रीलाल शुक्ल के 'राग दरबारी' विहीन... 20

अनूप शुक्ल- हमारा समाज 'एन्टी ह्यूमर' है- श्रीलाल 23

विनोद साव- पत्रों में निजता श्रीलाल शुक्ल की 24

अनूप शुक्ल- साहित्य अकादेमी में श्रीलाल शुक्ल जन्मशती 27

'व्यंग्य का संक्रमण काल' आयोजन पर विशेष 29-70

प्रेम जनमेजय- आरंभिक वक्तव्य ...विमर्श का सुदृढ़ धरातल 30

ज्ञान चतुर्वेदी- ...इक्कीसवीं सदी की चुनौतियां 33

यशवंत व्यास- मानवीय कथाएं पवित्र होती हैं 36

राकेश पांडेय- प्रवासी हिन्दी साहित्य में व्यंग्य... 37

लीलाधर मंडलोई- व्यंग्य कला आकाश... 41

प्रताप सहगल- हिन्दी में व्यंग्य नाटक 42

रमेश सैनी- ...विचारों का संक्रमण काल 44

गौतम सान्याल- ...के रेगिस्तान में कुछ ओसकण 47

गिरीश पंकज- कबीरी धार की कविता... 54

संजीव कुमार- ...वर्तमान स्थिति संक्रमण काल जैसी 57

सुभाष चंदर- समकालीन व्यंग्य की चुनौतियां 58

व्यंग्य रचना पाठ 60-71

बलराम अग्रवाल- बकरा और बादाम, मुर्दों के महारथी पालनहार, जोस्सी और जजमान 60

अलंकार रस्तोगी- मातृभाषा बनाम मात्र नब्बे घंटे 61

फारूक आफरीदी- अभागिन सड़क 62

अतुल चतुर्वेदी- गायब होना रीढ़ की हड्डी का 63

आचार्य राजेश- कुमार दोगलों का इलाज 64

कृष्णकुमार 'आशु'- ...दादा का नोबल दावा! 65

रणविजय राव- कबीरा खड़ा बाजार 67

अर्चना चतुर्वेदी- लेखक और इंजीनियर की जोड़ी 68

स्वाति चौधरी- किंकर्तव्यविमूढ़... 69

रिंकल शर्मा- ...सलाहकार- खामाखाँ जी 70

रणविजय राव- परिसंवाद पर विस्तृत रपट 72

चिंतन 74-78

बी.एल. आच्छा- ...मारक अभिव्यक्ति में मूल्य विधायक 74

समीक्षा तैलंग- ...अनुवाद में एआई की प्रासंगिकता 75

हरिशंकर राढ़ी- नाम बड़े पर... 77

गद्य व्यंग्य 79-112

सच्चिदानंद जोशी- सम्मान कैसे कैसे! 79

अरविंद तिवारी- होटल का भूत (उपन्यास अंश) 80

सुरेश मिश्रा 'उरतृप्त'- यादों में गौरैया (उपन्यास अंश) 82

अर्जुन चव्हाण- तीन लघु व्यंग्य 84

अशोक भाटिया- लघु व्यंग्य 85

हरीश नवल- वाक्यों के हीरो राम 86

संदीप तोमर- नया सूट (लघु व्यंग्य) 86

श्रीकांत चौधरी- घटनाएं होती रही हैं- उसने... 87

नीलम कुलश्रेष्ठ- लॉटरी लगना लाल लगाम... 90

राकेश सोहम्- स्वर्गवासी अफवाहें 92

सुमित प्रताप सिंह- पुलिस बनाम बदलापुर 94

पिलकेंद्र अरोड़ा- ए आई कहिन 94

राजेन्द्र वामन काटदरे- लघु व्यंग्य 95

रत्नावली कौशिक- बांके और बिहारी की... 96

हरि मृदुल- कवियों की हा-हा-हा! 97

गगन तलरेजा- जंगल में मोर नाचा 98

वीना सिंह- मोक्ष विद नेटवर्क कवरेज 99

रन्दी सत्यनारायण राव- 'अंगुलिमाल' को नोबेल... 101

लालित्य ललित- पांडेय जी और प्रेमिकाओं... 102

राजेंद्र ओझा- लघु व्यंग्य 103

राजशेखर चौबे- परलोक में चुनाव 104

संतोष तिवारी- आशान्वित गधा, निराश बकरा... 105

लोक सेतिया- बातें राजा और बेताल की 106

पंकज साहा- कथनी और करनी 107

सुशील यादव- सस्पेंडेड थानेदार का इंटरव्यू 108

राजेंद्र ओझा- लघु व्यंग्य 109

केदार शर्मा- गरीबों की थाली में... 110

पीयूष त्रिपाठी- हमारा राष्ट्रीय चरित्र- सेल्फी 111

सूर्यकांत द्विवेदी- रिटायरमेंट 112

पद्य व्यंग्य 113-120

दिविक रमेश- हां मैं कंधा हूं, सोया हुआ आदमी... 113

लक्ष्मी शंकर वाजपेयी- ग़ज़लें 114

देवेंद्र कुमार देवेश- अहम् ब्रह्मास्मि 115

यश मालवीय- चुनाव 115

सुभाष राय- नदियों का निनाद 116

मोहसिन खान 'तनहा'- ग़ज़लें 116

महेश कटारे सुगम- ग़ज़लें 117

गुरविंदर बांगा- फरमाइशें, ठूंठ 117

नीलम- ग़ज़लें 117

प्रेम विज- मैं जिंदा हूं 118

शैलेंद्र शांत- आह्वान, लोग जान चुके हैं... 118

वसंत सकरगाए- देखा-अनदेखा 118

अयोध्या प्रसाद- सड़कों के गड्ढे 119

प्रमोद सागर- एक प्रजातंत्रीय ट्रेजेडी 119

प्रतीक झा- सरकार का चरित्र, कागज की खामोशी 120

त्रिकोणीय 121-141

प्रेम जनमेजय- सरोकारों का रचनाधर्मी 122

आत्म साक्षात्कार- ...मेरा शौक नहीं, विवशता है 123

मेरी पहली व्यंग्य रचना- भैंसों का राष्ट्रीयकरण 126

ईमानदारी का मौसम 128

हिमालय-पुरुष हरिशंकर परसाई जी 130

श्रवण कुमार उर्मलिया से रजनीश कांत का संवाद 133

शेरजंग गर्ग- व्यंग्य कुछ ज्यादा ही वाचाल 137

राजेंद्र सहगल- विसंगत विद्रूप में करुणा 138

आलोक पुराणिक- विजुअल व्यंग्य 141

त्रिकोणीय में 'तुम कौन सी पाटी पढ़े हो लला' 142-148

प्रेम जनमेजय- सामाजिक यथार्थ और व्यंग्य का अनोखा मिश्रण 142

राजेश कुमार- एक कोशिश 143

दिविक रमेश- मेरे लिए सुखद आश्चर्य 145

लालित्य ललित- 147

प्रभात गोस्वामी- ...अंतर्द्वन्द्व को कुरेदती कथा 148

इधर जो मैंने पढ़ा 149

जय प्रकाश पांडेय, विष्णु नागर, धर्मपाल महेंद्र जैन, प्रेम जनमेजय, दिविक रमेश, धीरेंद्र अस्थाना, अजय अनुरागी, तरसेम गुजराल, सूर्यकांत शर्मा, शैलेन्द्र शरण, भावना शेखर कोमल, तेजस पूनियां, आरती स्मित, कृष्ण कुमार 'आशु', प्रमोद कुमार प्रसाद, कमलनाथ, अखिलेश श्रीवास्तव चमन, नीरजा माधव, अशोक भाटिया, प्रबोध गोविल, सुनील जैन राही आदि।

समाचार 164-172

आरंभ

24 अगस्त 2012 कों साहित्य अकादेमी, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान एवं 'व्यंग्य यात्रा' के संयुक्त तत्वावधान में, साहित्य अकादमी सभागार में, दो दिवसीय संगोष्ठी और कार्यशाला का आयोजन हुआ था। इस आयोजन में नित्यानंद तिवारी, विश्वनाथ त्रिपाठी, सुधाकर अदीब, गोपाल चतुर्वेदी, शंकर पुणताम्बेकर, नरेंद्र कोहली, शेरजंग गर्ग, सूर्यबाला, दिविक रमेश, यज्ञ शर्मा, गिरीश पंकज, गौतम सान्याल, अतुल चतुर्वेदी, कृष्ण कुमार आशु, सुभाष चंदर, ललित लालित्य, अर्चना चतुर्वेदी आदि ने व्यंग्य के विभिन्न बिंदुओं पर विमर्श एवं रचना-पाठ किया था। व्यंग्य विमर्श के अनेक बिंदुओं पर महत्वपूर्ण चर्चा तो हुई ही, कार्यशाला के माध्यम से अनेक युवा व्यंग्यकारों को व्यंग्य की समझ भी मिली।

मेरा मानना है कि इस दो दिवसीय आयोजन की महत्वपूर्ण उपलब्धि, वरिष्ठ आलोचक नित्यानंद तिवारी एवं विश्वनाथ त्रिपाठी का उद्‌बोधन रहा। नित्यानंद तिवारी जी ने तो अपने उद्‌बोधन में व्यंग्य को न केवल विधा स्वीकारा अपितु तर्क सहित उसके विधागत स्वरूप की चर्चा की। अपने उद्‌बोधन में उन्होंने कहा था, '1990 के आसपास हम लोगों ने यह पाया कि अनेक अच्छे व्यंग्य लेखक समूह रूप में व्यंग्य को विधा के रूप में स्वीकार करने का दबाव डाल रहे हैं। और यह अकारण नहीं है। व्यंग्य स्वाधीनता के बाद के यथार्थ को प्रस्तावित करता है।

व्यंग्य विधा क्यों नहीं हो सकती? व्यंग्य क्या शैली है? व्यंग्य शैली नहीं है, शैली व्यक्तिगत होती है लेकिन व्यंग्य साहित्य में जिस तरह से यथार्थ का बयान किया जाता है- क्या वह शैली है? विधा वस्तुगत होती है और व्यंग्य ने इन सब चीजों को छोड़ दिया है। व्यंग्य रचना में कहां होता है- जहां चतुराई से बात की जाती है, वाग्वैदग्ध्य होता है, या फिर कोई चुटीली बात कही जाती है। परंतु यह स्थिति रचना में व्यंग्य की है, व्यंग्य रचना की नहीं। यही कारण है कि अब बिलकुल अलग मांग ये हो रही है कि व्यंग्य एक विधा है।...कबीर और कुछ संतों ने व्यंग्य किया है, तुलसी भी व्यंग्य करते हैं पर उनका पूरा बंधान व्यंग्य का नहीं है। जब व्यंग्य करते हैं तो वह किसी हस्तक्षेप की तरह होता है, वह व्यंग्य का बंधान नहीं है, यह मात्र भंगिमा है। मात्र भंगिमा से व्यंग्य को अलग करना होगा।'

इस आयोजन ने हिंदी विमर्श को न केवल सुदृढ़ आधार दिया अपितु अन्य विधाओं की पंगत में भी बैठाया। परसाई ने कहा था, 'व्यंग्य की प्रतिष्ठा इस बीच साहित्य में काफी बड़ी है- वह शूद्र से क्षत्रिय मान लिया गया है।' क्षत्रिय बनते ही हिंदी व्यंग्य एक योद्धा बन गया। योद्धा को कवच की आवश्यकता होती है। डॉ. नित्यानंद तिवारी का कथन उसका कवच ही है।

बहुत समय से व्यंग्य शुभचिंतकों का मुझ पर दबाव था कि साहित्य अकादेमी में सन् 2012 जैसा आयोजन पुनः हो। यह दबाव मेरा भी मनभावन था। अपने लेखन के पैरों पर कुल्हाड़ी मारने के ऐसे अवसर, व्यंग्य को ओढ़ने-बिछौने वाला मेरा मन, चूकने नहीं देता है। आयोजन तो हो पर मात्र आयोजन के लिए नहीं, किसी नए विषय पर व्यंग्य विमर्श की जमीन तैयार हो। नित्यानंद तिवारी के कथन ने तो व्यंग्य के विधागत प्रश्न को हल कर ही दिया। व्यंग्य के तराजू में हास्य-व्यंग्य के पलड़ों में कौन भारी की बहस परिणम विहीन सिद्ध हो चुकी है। व्यंग्य विमर्श में साहित्य के विस्तृत आकाश के रचनाधर्मियों की भागीदारी हो।

अवचेतन में आयोजन को लेकर चिंतन प्रक्रिया निरतंर चलने लगी। चिंतन के कुछ बिंदु उभरे। व्यंग्य एक संक्रमण काल से गुजर रहा है। बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में अपने शिशु कदमों के साथ प्रवेश करने वाली पीढ़ी आज बुजुर्ग हो गई है। इक्कीसवीं शताब्दी के आंरभ में व्यंग्य लेखन में कदम रखने वाला शिशु व्यंग्यकार आज युवा हो गया है। यह पीढ़ी अपने समय में, डिजिटल प्रभावों के कारण, तेजी से बदलते समय की विसंगतियों से मुठभेड़ कर रही है। जो अग्रज पीढ़ी अपने समय के युवा स्वर को नहीं पहचानती है, उसे स्पेस नहीं देती है वह दंभी है और अपने समय के साथ न्याय नहीं करती है। समाज की प्रगति तभी सही मार्ग पर गतिशील हो पाती है जब उसमें अतीत और वर्तमान का संतुलन होता है। यही संतुलन एक सकारात्मक, उन्नत एवं गतिशील समाज का निर्माण करता है। युवा पीढ़ी के टूल बदले हैं। कहीं परंपरा का पालन है तो कहीं परिवर्तन की लहर। उपभोक्तावाद ने न्याय, शिक्षा, स्वास्थ्य और यहां तक साहित्य को भी वस्तु बना दिया है। आवश्यक है कि इस संक्रमण काल में हिंदी व्यंग्य की पुर्नपहचान की जाए। आवश्यक है बदलते समय की करवट पर विमर्श हो। तकनीक की आंधी में चुंधियाई आंखों की दृष्टि को पढ़ा जाए।

'व्यंग्य यात्रा' की दो दशकीय यात्रा पर मैंने व्यंग्य विमर्श की जिस कुल्हाड़ी और सूली पर चढ़ने की तैयारी की जिद का जिक्र किया था उसका खाका तैयार हो गया। साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष, सचिव, परामर्श मंडल के अध्यक्ष से चर्चा की। प्रस्ताव भेजा। सकारात्मक संकेत मिले।

'व्यंग्य यात्रा' के अंक 81 के संपादकीय में मैंने सौ प्रतिशत वाली अहंकारीय शैली में लिखा था, 7 और 8 फरवरी 2025 को साहित्य अकादेमी दिल्ली में, 'व्यंग्य का संक्रमण काल' विषय पर दो दिवसीय संगोष्ठी आयोजन तय है। संगोष्ठी में व्यंग्य के संक्रमण काल, व्यंग्य की स्वीकार्यता, कबीरी धार की कविता, व्यंग्य का आलोचना शास्त्र आदि जैसे व्यंग्य विमर्श के महत्वपूर्ण मुद्‌दों के अतिरिक्त कार्यशाला तथा व्यंग्य पाठ का आयोजन भी होगा।'

साहित्य अकादमी से सहयोग मिलने की संभावना कम थी। सहयोग न मिलने पर अपने भिक्षा पात्र पर भरोसा था, इसलिए लिखा, 'इस दो दिवसीय संगोष्ठी की सफलता 'व्यंग्य यात्रा' के शुभचिंतकों के तन-मन और धन जैसे सहयोग पर निर्भर करेगी। विश्वास है कि गिलहरी से लेकर हनुमान तक के इसके शुभचिंतक ही आर्थिक संकट के विशाल सागर-सी चुनौती के लिए सेतु का निर्माण करेंगे। 'व्यंग्य यात्रा' के एक नहीं अनेक भामाशाह हैं।'

अकादमी सचिव को जो प्रस्ताव भेजा था, उसका 9 जनवरी को उत्तर मिला कि आपका प्रस्ताव हिंदी परामर्श मंडल को भेज दिया गया है। सोचा कि जब आयोजन का

सोच लिया है तो कैसे भी करते हैं। बजट दो लाख के लगभग था। अचानक भिक्षा पात्र को लबालब भरने का आश्वासन देने वाले हाथ खींच लिए गए। प्रसाद की पंक्तियां गूंजने लगीं- 'विस्मृति आ, अवसाद घेर ले/ नीरवते! बस चुप कर दे;/ चेतनता चल जा, जड़ता से/ आज शून्य मेरा भर दे।' मन अवसाद से भर गया। पहली बार किसी आयोजन को रद्द करने का अवसाद झेला। 25 जनवरी को अपनी फेसबुक वॉल पर लिखा, 'मित्रो! 'व्यंग्य यात्रा' के तत्वाधान में, 7 और 8 फरवरी को, साहित्य अकादमी में, 'व्यंग्य के संक्रमण काल' पर दो दिवसीय आयोजन में जी जान से जुटा था कि अचानक अपरिहार्य कारण ने जन्म लिया। समरथ को नहीं दोष गोसाईं...। आयोजन पटरी से उतर गया। अपरिहार्य कारणों से इस आयोजन को स्थगित कर रहा हूं। आयोजन स्थगित किया है, रद्द नहीं। इस आयोजन को, आपकी शुभकामनाओं के साथ जल्द पटरी पर लाऊंगा।

हिंदी व्यंग्य के संक्रमण काल पर साहित्य अकादेमी और 'व्यंग्य यात्रा' के संयुक्त तत्वावधान में परिसंवाद इस बीच साहित्य अकादेमी के उपसिचव डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश का 21 मई को लिखा पत्र मिला। पत्र के अंतर्गत सूचित किया गया कि हिंदी परामर्श की 70वीं बैठक में आपके संगोष्ठी के प्रस्ताव को एक दिवसीय परिसंवाद करने की स्वीकृति मिली है। नियमानुसार 10 अधिकतम प्रतिभागी सहभागिता कर पाएंगे। यह भी लिखा गया कि अकादमी सहयोगी संस्था से अपेक्षा करती है संस्था बाहर से आने वाले अतिथियों के लिए के आवास एवं भोजन, कार्यक्रम के दौरान जलपान एवं भोजन, निमंत्रण पत्र, फोटोग्राफी, स्थानीय परिवहन आदि की व्यवस्था कर हमारा सहयोग करेगी। दो दिवसीय आयोजन को एक दिवसीय परिसंवाद में समेटना दुष्कर था। अकादमी का सहयोग भी अल्प लगा पर यह संतोष हुआ कि अकादमी के मंच पर व्यंग्य विमर्श की पुन: उपस्थिति होगी। अधिक सहयोग के लिए अध्यक्ष, सचिव और उपासचिव से बातचीत का दौर चला। बातचीत के परिणाम सुखद रहे। अनुमति मिली कि 'व्यंग्य यात्रा' अपने व्यय पर व्यंग्य पाठ का आयोजन कर सकती है तथा विमर्श सत्र के लिए कुछ विद्वानों को आमंत्रित कर सकती है।

साहित्य अकादमी के अधिकतम सहयोग के बावजूद भिक्षा का पात्र आधा खाली था। **इंडिया नेट बुक्स** ने कार्यक्रम के दौरान भोजन, चाय एवं बाहर से आए कुछ अतिथियों के आवास आदि का दायित्व लिया। **अद्विक प्रकाशन, नोजगे पब्लिक स्कूल और प्रलेक प्रकाशन** ने अपेक्षा से अधिक सहयोग दिया। **श्रीकांत चौधरी** जैसे भामाशाह तो सदा साथ रहते ही हैं। पुत्र उज्ज्वल कुंद्रा और 'व्यंग्य यात्रा' प्रबंधिका आशा कुंद्रा ने सभी रिक्तताएं भर दीं। सबका आभार कि इन सबके सहयोग से ऐतिहासिक आयोजन अंतत: सफल हुआ। पर आयोजन सफल होने से पूर्व, एक विवाद के कारण, इसके पूर्ण होने में संदेह भी उभरा था।

अचानक साहित्य अकादमी सचिव के विरुद्ध यौन शोषण का समाचार साहित्य जगत की सुर्खी बन गया। कुछ शुभचिंतकों ने आयोजन न करने का दबाव डाला। इसमें युवा स्वर भी था। विरोध का स्वर आपको मांजता है। आपके उस अहंकार तो तोड़ता है कि मैं ही सही हूं। आलोचना तो व्यंग्य का मूल स्वर है इसे उपेक्षित करने वाला व्यंग्यधर्मी नहीं हो सकता। ये दीगर बात कि अधिकांश आलोचना का मधुर फल ही चखना चाहते है तिक्त नहीं। जो पीढ़ी युवा स्वर पर ध्यान नहीं देती है वे भविष्य को नहीं रच सकती। आयोजन से जुड़ी समस्याएं कुछ और सोचने नहीं दे रहीं थीं फिर भी विरोध के स्वर को प्राथमिक माना। किंकर्तव्यविमूढ़ मन कभी सही फैसला नहीं ले सकता। कोई फैसला करेगा तो मूढ़ सिद्ध होगा। और यदि समूह को लेकर कोई फैसले लेना हो तो एकला चलो खतरनाक होता है। मुझे आयोजन के विभिन्न सत्रों के अध्यक्षों, आलेख वाचकों और शुभचिंतकों से विमर्श करना उचित लगा। सलाह मांगी और उनकी उपस्थिति की स्थिति समझनी चाही। एक सहमती बनी की आयोजन संस्था के साथ मिलकर किया जा रहा है। सभी ने आश्वस्त किया के वे आयेंगे और आयोजन होना चाहिए। सभी प्रतिभागियों का आभार कि उन्होंने नैतिक बल दिया और सम्मिलित हुए। इसी के बल पर मैंने ओखल में सर दिया। सर बचा हुआ है। सभागार में इतनी उपस्थिति थी कि तिल को भी अपने बैठने की जगह ढूंढनी पड़े। नारी स्वर को मुखर करने वाली, हमारे समय की महत्वपूर्ण साहित्यकार अनामिका एवं अन्य अनेक महिला रचनाकारों की उपस्थिति ने संबल दिया। इसी के कारण विरोध के स्वरों ने अपने गिरेबान झांके और ...। धीरे-धीरे विरोध का फेन विलीन हो गया। व्यक्तिगत कारणो से जन्मी कुंठाएं, अंधेरे कमर के एकांत में, सर थामकर बैठ गईं। मुझे बदनाम करने वाली व्यक्तिगत आरोप से अलंकृत रचनाओं ने उपेक्षा का दर्द भोगा। उन्हें समझ आया कि व्यंग्य व्यक्ति पर नहीं प्रवृत्ति पर होना चाहिए। देश के अनेक महत्वपूर्ण राष्ट्रीय एवं स्थानीय समाचार पत्रों एवं पत्रिकाओं आयोजन को रेखांकित किया। सोशल मीडिया पर प्रशंसात्मक टिप्पणियों ने कुंठितों को अपने गिरेबान में झांकने का सुअवसर दिया।

इस अंक में, परिसंवाद में पढ़े गए, अधिकांश आलेख और विस्तृत समाचार है।

श्रीलाल शुक्ल का जन्मशति वर्ष

यह श्रीलाल शुक्ल जन्मशती वर्ष है। हरिशकर परसाई जन्मशती वर्ष धूमधाम से मनाया गया था, श्रीलाल शुक्ल जन्मशती वर्ष मनाना था अत: मनाया गया। 'व्यंग्य यात्रा' का अक्टूबर-दिसंबर-2008 अंक श्रीलाल जी पर केंद्रित था। इस अंक को लेकर श्रीलाल जी की प्रतिक्रिया थी कि इसने उन्हें रिबिल्ट किया है। उनके जाने के बाद 'व्यंग्य यात्रा' के अक्टूबर-दिसंबर-2011 अंक में श्रीलाल जी पर विशेष सामग्री थी। जन्मशती वर्ष को लक्षित कर इस अंक में भी श्रीलाल शुक्ल पर विशेष सामग्री 'पाथेय' में दी जा रही है। 28 अगस्त, 2025 को साहित्य अकादेमी ने 'श्रीलाल शुक्ल जन्मशती संगोष्ठी' का आयोजन किया था। उसकी विस्तृत रपट भी इस सामग्री का हिस्सा है।

इस बार त्रिकोणीय श्रवण कुमार उर्मालिया और द्विकोणीय आचार्य राजेश कुमार के उपन्यास 'तुम कौन सी पाटी पढ़े हो लला' पर केंद्रित है।

रामदरश मिश्र और गोपाल चतुर्वेदी का जाना हिंदी व्यंग्य की अपूर्णीय क्षति है। इस बार पाथेय में उन पर सामग्री जा रही है। व्यंग्य के दोनों सेनानियों को व्यंग्य यात्रा परिवार की विनम्र श्रद्धांजलि।

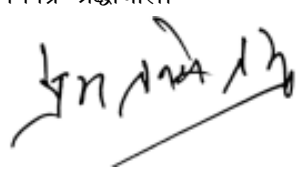

चंद्रेश्वर, बलरामपुर

व्यंग्य यात्रा का नया अंक प्राप्त हुआ। यह 84वां अंक है, जुलाई-सितंबर 2025 कुलजमा 148 पृष्ठों में स्तरीय साहित्यिक सामग्री के साथ निकली इस पत्रिका की कीमत मात्र 20 रुपए है। इसमें गीत, गजलें, कविताएं, व्यंग्य लेख, कथाएं और आलोचनात्मक आलेख भी शामिल हैं। इन सबमें व्यंग्य की चेतना का स्वर प्रमुख है। आज जबकि देश में सरकारी नीतियों के कारण किसी भी भाषा में साहित्यिक पत्रिकाएं निकालना और रजिस्ट्रर्ड डाक से उन्हें पाठकों तक पहुंचा पाना दिन-ब-दिन मुश्किल होता जा रहा है, ऐसे में 'व्यंग्य यात्रा' की यात्रा को देखकर हमें प्रसन्नता होती है।

देवमणि पांडेय, मुंबई

नया अंक जुलाई-सितंबर 2025 डाक से प्राप्त हुआ। गणपति उत्सव में 'व्यंग्य यात्रा' के संपादक मुंबई में ही थे। उन्हीं के सानिध्य में चित्रनगरी संवाद मंच में श्रीलाल शुक्ल की जन्म शताब्दी मनाई गई। व्यंग्य यात्रा का हर अंक गागर में सागर होता है। इस बार भी पाथेय, चिंतन, त्रिकोणीय जैसे स्थाई स्तंभ में समृद्ध सामाग्री है साथ ही व्यंग्य रचनाओं का पिटारा भी जबरदस्त है। द्वितीय आवरण पृष्ठ पर देश के महत्वपूर्ण साहित्यिक आयोजनों की रंगीन तस्वीरें दस्तावेज के रूप में पेश की गई हैं, यह भी काबिले तारीफ है।

व्यंग्य यात्रा की सम्पादकीय दृष्टि का ही यह कमाल है कि इसमें एक साथ कई पीढ़ियां चहलकदमी करती नजर आती हैं। यहां हिन्दी साहित्य के संजीदा रचनाकार भी व्यंग्य के आंगन में हाजिरी लगाते हैं। हिन्दी कविता की 'कबीरी धार' के अंतर्गत रामदरश मिश्र, विजय बहादुर सिंह, विष्णु नागर, उदय प्रताप सिंह, विज्ञान व्रत, यश मालवीय, ओम निश्चल जैसे कई प्रमुख रचनाकार अपनी व्यंग्य रचनाओं के साथ इस अंक में मौजूद हैं।

व्यंग्य यात्रा का यह इक्कीसवां वर्ष है। यह भी एक चमत्कार ही है कि पिछले बीस सालों से व्यंग्य यात्रा सिर्फ रुपए 20 में उपलब्ध है। इस पावन यज्ञ में जो लोग आहुति दे रहे हैं वे सभी बधाई के पात्र हैं। मेरी दुआ है कि व्यंग्य यात्रा के रचनात्मक सफर का यह सिलसिला आगे भी ऐसे ही जारी रहे। सीमित साधनों के बावजूद निरंतर प्रकाशित होकर व्यंग्य यात्रा ने हिंदी पत्रिकाओं में अपनी जो विशिष्ट पहचान बनाई है वह बेमिसाल है। हिंदी साहित्य के राजपथ पर जिस स्वाभिमान के साथ सर उठाकर व्यंग्य यात्रा चल रही है आगे भी इसका शानदार सफर ऐसे ही जारी रहे, बस मेरी यही शुभकामना है।

वंदना वाजपेई, नई दिल्ली

व्यंग्य यात्रा का नया अंक व्यंग्यों, पुस्तक समीक्षाओं और कविताओं की अपनी पूरी सजधज के साथ है। पत्रिका हाथ लगते ही प्रतिष्ठित दिग्गज नामों के साथ कविता खंड ने आकर्षित किया। सुभाष राय जी, रामदरश मिश्र जी, ओम निश्चल जी, कुमार अनुपम जी, रणविजय राव जी, लालित्य ललित जी, गिरीश पंकज जी की कविताओं की तो पहले से ही प्रशंसक हूँ। इस बार देवेन्द्र कुमार देवेश जी की कविताओं ने चौंकाया। अभी कुछ दिन पहले उनका गजल पाठ का वीडियो देखा था और अब कविताओं ने कवि रूप को सार्थक अभिव्यक्ति दी है। अक्सर किसी मंच पर दूसरों को रोशन करने वाले अपनी रोशनी से दूर हो जाते हैं। लेकिन अब समय आ गया है कि उनका भी संज्ञान लिया जाए। कविता तो फूल की तरह होती है। जहाँ भी ये खिल गई हो या खिलने की संभावना हो समाज उपवन उसके द्वारा सुगंधित करने से वंचित नहीं करना चाहिए। इस लिहाज से व्यंग्य यात्रा ने पाठकों को एक अच्छा तोहफा दिया है।

सुधीर ओखदे जी का व्यंग्य 'कहानियाँ मर चुकी हैं' काफी धारदार है। सुभाष नीरव

जी की लघुकथा 'कबाड़' बच्चों को सपनों के पंख देकर खाली हाथ हो चुके वृद्ध माता-पिता के दुखों की बानगी है। पिता अपने बेटे को घर का सबसे अच्छा कमरा देता है ताकि वह भविष्य बना सके। वहीं बेटे के घर में पिता के लिए केवल स्टोर रूम है। मार्मिक लघुकथा। राम स्वरूप दीक्षित जी के लघुव्यंग्य मारक हैं। 'मानसिकता' स्त्री पुरुष के प्रति दृष्टिकोण के अंतर पर प्रहार करता है तो 'मातृ दिवस', सोशल मीडिया और दिखावे के दौर में मातृ दिवस पर भूली-बिसरी, ठुकराई गई माओं के प्रति सम्मान के प्रदर्शन की संस्कृति पर प्रहार है।

समीक्षा का खंड अच्छी पुस्तकों की समीक्षाओं द्वारा पाठक के मन में उन्हें पढ़ने की इच्छा जागृत करता है। मधु कांकरिया द्वारा लिखित काठ के पुतले (प्रज्ञा) की समीक्षा व जय प्रकाश पाण्डेय जी द्वारा 'बादशाह सलामत हाजिर हों' (बालेंदु द्विवेदी) गंभीर समीक्षाएँ हैं। वही भुल्लों बुआ यानि अर्चना चतुर्वेदी की 'गिरने में क्या हर्ज है (डॉ. मुकेश असीमित) की समीक्षा रोचक तरीके से लिखी हुई।

श्रीकांत चौधरी, दमोह

ना यह कोई स्तुति है, ना अतिश्योक्ति है कि व्यंग्य यात्रा का हर अंक की किसी न किसी रूप में विशेषांक जैसा लगता है! जुलाई सितंबर 2025 का अंक लगभग पूरा पढ़ लिया है, नए लोगों के लिए भी यह पत्रिका, एक बहुत बड़ा रंगमंच बन गई है! और इस बार तो रिकॉर्ड तोड़ कविताएं और गजलें प्रकाशित हुई हैं, अधिकांश बहुत ही अच्छी हैं और उनमें मौलिकता है! और कविता लिखने में तो यह सुविधा हो गई है कि किसी शिल्प विधान की जरूरत नहीं है, आप चाहें तो एक बयान देकर, कुछ पंक्तियों को ऊपर नीचे करके उसे कविता कह सकते हैं, अब तो बड़े-बड़े दिग्गज भी इस क्षेत्र में अपना झंडा फहरा रहे हैं!

अगर कुछ लोग बुरा माने तो मैं कहना

चाहूंगा कि व्यंग्य केवल विधा नहीं है बल्कि, यह तो रस छंद अलंकार भी है! और मेरे इस कहन के प्रमाण के लिए व्यंग्य यात्रा और अखबारों डिजिटलाकार में कम्प्यूटर लैपटॉप पर प्रकट होने वाली और अन्य पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित, छोटे बड़े लेखक कवियों की कविताएं/यानी काव्यात्मक गद्य इसका प्रमाण है! बहरहाल व्यंग्य यात्रा का बहुत बड़ा महान योगदान, व्यंग्य के छोटे बड़े, नए पुराने पूरब पश्चिम उत्तर दक्षिण में बिखरे हुए व्यंग्यकारों को, व्यंग्य साहित्य के आकाश में नक्षत्र मंडल की तरह स्थापित कर देना ऐतिहासिक कृत्य है जिसके लिए पूरा संपादक मंडल और बहुत सारे लेखक पाठक भी उत्तरदाई हैं!

एक अत्यंत महत्वपूर्ण निंदा योग्य विषय रह गया है कि- इस चराचर विश्व में कोई ऐसा प्राणी नजर नहीं आता, जो व्यंग्य यात्रा में प्रकाशित रचनाओं की मुद्रण की त्रुटियां ठीक करने/ प्रूफ़रीडिंग के लिए के लिए समय निकाल सके? संपादक प्रकाशक ने जैसे यह ठान रखी है कि लेखकों पाठकों से, जो व्यंग्य यात्रा पढ़ते हैं, बौद्धिक व्यायाम कराया जाए! संभव हो तो इस पहलू पर अवश्य ध्यान दीजिए। बाकी देश की हालत- देवि सुदामा की दीन दशा-को छोड़कर शेष सब कुशल मंगल है।

पंकज चतुर्वेदी, दिल्ली

स्थिर मूल्य के प्रति प्रेम जनमेजय जी की प्रतिबद्धता को प्रणाम। 148 पेज की पत्रिका और कीमत मात्र 20 रुपये! यह केवल 'प्रेम' से संभव हो सकता है। सच यह प्रेम जनमेजय जी ही संभव कर सकते हैं।

समीक्षा तैलंग, पुणे

व्यंग्य यात्रा पत्रिका में प्रकाशित होना हमेशा गौरवान्वित करता है। हमें अपनी लेखकीय जिम्मेदारी का एहसास कराता है। और इसके लिए जब प्रेम जनमेजय सर फोन करके पूछते हैं कि कुछ नया लिखा है? तब लगता है कि आपका लिखा हुआ इसी की प्रतीक्षा में था जिसके लिए वो लिखा गया।

डॉ. सम्राट सुधा, नई दिल्ली

देश की प्रतिष्ठित व्यंग्य त्रैमासिकी 'व्यंग्य यात्रा' (जुलाई-सितम्बर, 2025) में स्थान मिला है मेरे व्यंग्य लेख 'राजनीति के टट्टू और सज्जनता के घोड़े को।'

व्यंग्य यात्रा में छपना एक संतुष्टि का हेतु है। संपादक श्री प्रेम जनमेजय के हाथों रचना का चयनित और प्रकाशित होना, मुझे मेरी रचना की गुणवत्ता के प्रति आश्वस्त करता है। लिखना मेरे लिए स्वयं जीवन को और अधिक सुंदर रूप में समझना है!

विप्रम, गाजियाबाद

फेसबुक पर मित्रों की व्यंग्य यात्रा पर कुछ दिनों से आ रही टिप्पणीयां पढ़कर रोमांचित हो रहा था मैं। बल्कि अपनी भी एक रचना छपी है पृष्ठ 78-79 पर जिसका नाम है- पार्क में पार्किंग की पैमास। अपनी छपास को कौन नहीं चाहेगा देखना। मुंह दिखाई की आतुरता तो आप समझ रहे होंगे।

ये तो मैं जानता था कि दोस्त मित्र दिल्ली में नहीं हैं। पर ये न पता था कि घर मतलब फ्लैट पर भी कोई न होगा। खैर सिक्योरिटी गार्ड के मोबाइल पर दोस्त मित्र से बात हुई। शुरुआत में जो शंका हो रही थी उसका हल दोस्त मित्र नें फोन द्वारा अपने एक पड़ोसी से करवा दिया। यानी जिसके लिए भारी बारिश में उनके निवास तक आया था। अब वह यात्रा किसी को व्यंग्यमय लग सकती है। पर व्यंग्य को लिखने-पढ़ने वाले या यूं कहें इसे ओढ़ने-बिछाने वाले किसी भी हद तक जा सकते हैं जैसे अपने ये दोस्त मित्र प्रेम जनमेजय जी। भला कुल डेढ़ सौ पृष्ठ की खालिश साहित्यिक पत्रिका मात्र बीस रुपए में कहीं मिल सकती है! कहीं नहीं। है ना हैरत की बात! मैं डीटीसी पास धारक शालीमार गार्डन गाजियाबाद से साक्षर अपार्टमेंट, पश्चिम विहार दिल्ली गया था। और व्यंग्य यात्रा ले कर आ गया।

आभार के साथ दुलार में जुनूनी दोस्त मित्र को प्रेम से धन्यवाद जरूर करूंगा। साथ ही उनके पड़ोसी ओ पी कपूर साहब का भी हार्दिक आभार। जिन्होंने पत्रिका के साथ एक बैग भी देना चाहा। जिसे मुस्कराकर मैंने लोटा दिया था यह कहते हुए- थेंक्यू सर! पढ़ने की चीज दिखनी चाहिए! छिपाई क्यों जाए।

दोस्त मित्र प्रेम जी को कॉलेज के दिनों से जानता हूं। एक क्लास एक ही गुरुवर के शिष्य। सांस्कृतिक साहित्यिक गतिविधियां का कुशल नेतृत्व करते थे ये दोस्त मित्र। कॉलेज की पत्रिका ही नहीं शैक्षिक टूरों के आयोजनों में इनकी बड़ी भागीदारी हुआ करती थी। पहले ये प्रेरक थे अब व्यंग्य यात्रा से ये हमारे जैसे अनेकों के प्रणेता हैं। मित्रो! मजे की बात ये कि हम गली मोहल्ले की क्रिकेट एक साथ खेले हैं आर के पुरम सेक्टर एक में। क्रिकिट भी व्यंग्य में तरंग लाने का विशेष काम करती है। जानने वाले समझ लेंगे कि- फ्लैट शॉट। स्टेट ड्राइव। लिफ्ट या लोफ्टिड शॉट। शोर्ट लेंगथ, फुल टॉस, बम्पर बॉल या पंच। क्रिकिट की ये तकनीकें व्यंग्य में भी पाई जाती हैं।

विष्णु नागर, नई दिल्ली

'व्यंग्य यात्रा' शायद आज की तारीख में भारत की शायद सबसे सस्ती (कम मूल्य की) पत्रिका है। इसका मूल्य केवल बीस रुपए है। यह पत्रिका पिछले 21 वर्षों से प्रकाशित हो रही है और इसका यह ताजा 84वां अंक है। तब से इसका मूल्य बीस रुपए चला आ रहा है। एक रुपए क्या एक पैसे भी नहीं बढ़ा है। ऐसा कोई उदाहरण निजी क्या सरकारी पत्रिका में भी शायद नहीं मिले!

लेखक के नाते व्यंग्यकार मित्र प्रेम जनमेजय 'व्यंग्य यात्रा' को मेरे पास मुफ्त भेजते रहे हैं तो कभी इसकी कीमत पर ध्यान नहीं गया। इतने वर्षों में आज ध्यान गया कीमत पर तो चकित हुआ। यह पत्रिका भी कोई पतली सी नहीं है। खासी मोटी-ताजी है। इसके ताजा अंक में भी 150 पृष्ठ हैं। लगभग इतने ही पृष्ठ हर अंक में होते हैं। इसमें विज्ञापन कुल दो हैं। इसके अलावा इसे अपने प्रत्येक ग्राहक को भेजने में ऊपर से आठ रुपए हर प्रति पर खर्च होते हैं। पत्रिका की पैकेजिंग का खर्च 80 पैसे हैं।

इसका रहस्य जनमेजय जी से जानना चाहा तो पता चला इसके 1400 नियमित ग्राहक हैं। इसके अलावा इसका डिजिटल संस्करण नॉटनल (notnul) पर उपलब्ध है। वह कुछ अपना धन भी लगाते हैं। कुछ शुभचिंतकों से आ जाता है।